ये ज़ंजीरें कब टूटेंगी

(तेवरी-संग्रह)

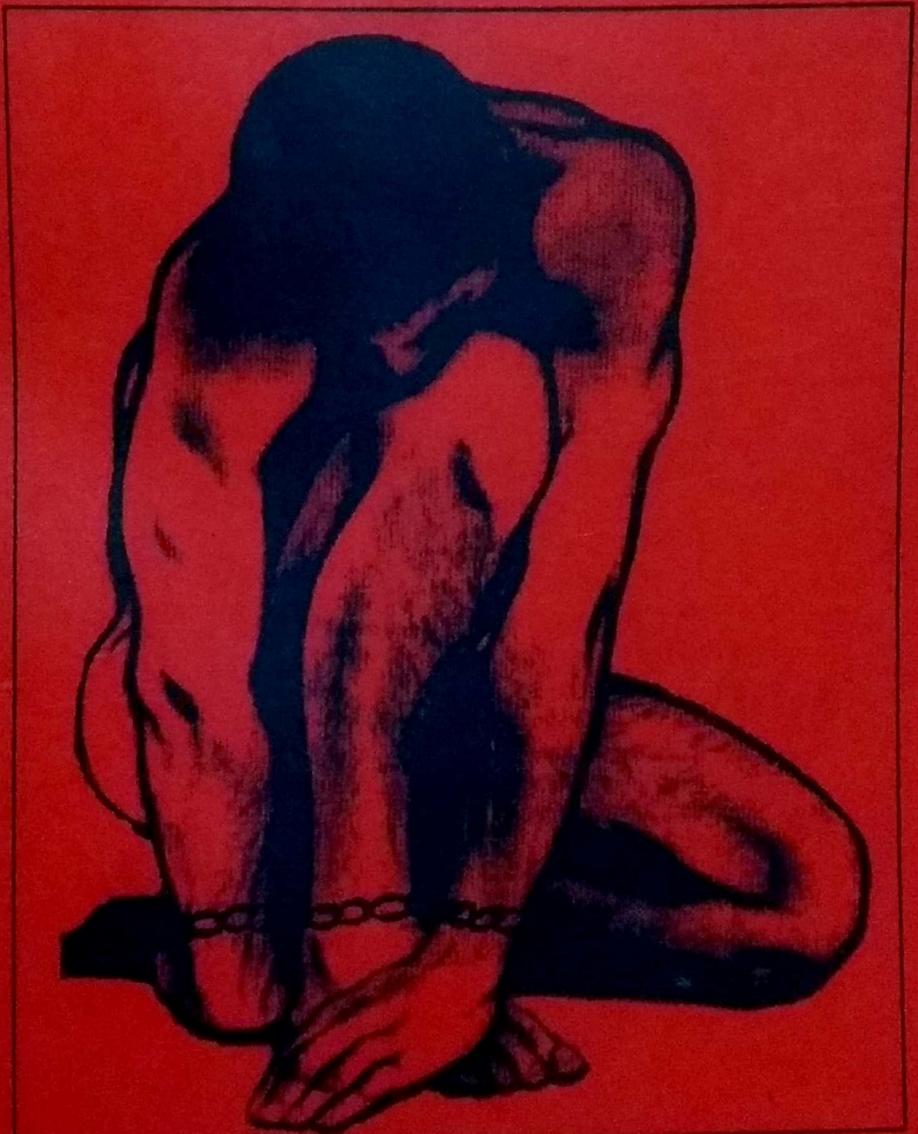

-दर्शन बेजार

Scanned by CamScanner

ये ज़ंजीरें कब टूटेंगी

(तेवरी संग्रह)

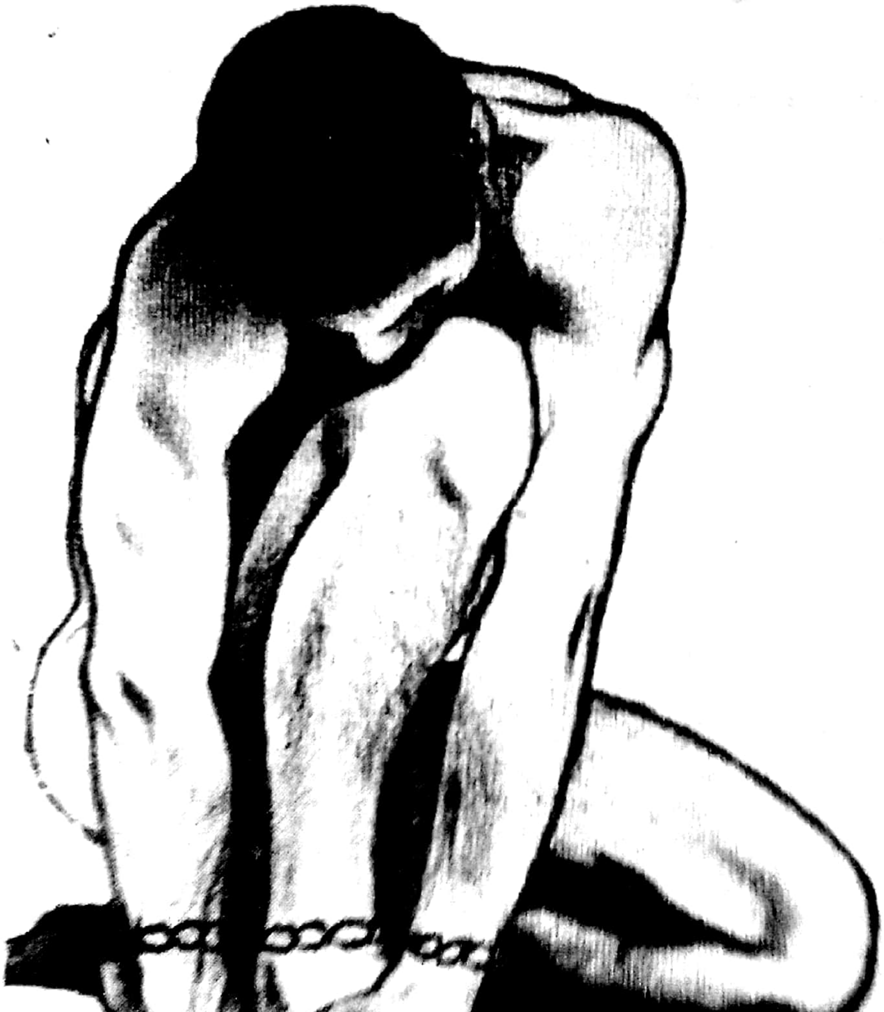

-दर्शन 'बेज़ार'

Scanned by CamScanner

ये ज़ंजीरें कब टूटेंगी

(तेवरी संग्रह)

लेखक : दर्शन बेजार

प्रथम संस्करण : 2009

मूल्य : 40/-

प्रकाशक :
सार्थक सृजन प्रकाशन
१५/१०६, ईसा नगर, अलीगढ़
202001 (उ०प्र०)

शब्द संयोजक : आधुनिक कम्प्यूटर, अलीगढ़

मुद्रक : आशू प्रिन्टिग प्रेस, अचल ताल, अलीगढ़

Yah Zanjeeren Kab Tooten-gee

-:Tewari Collecton by:-

- DARSHAN BEZAR

Scanned by CamScanner

-अर्पण-

पैतृक गाँव पँचगाई के
उन सभी ज्ञात और अज्ञात पूर्वजों,
जो अपनी-अपनी
क्षमता के अनुरूप
इस गाँव का रूप सँवारते रहे;
जिन्होंने-
मात-पिता, अतिथि-सेवा में
तल्लीन रहने वाले
संस्कार दिये
और
पारम्परिक प्रेम का
अपार भण्डार सौंपा
जो कि नई पीढ़ी में
आज तक विद्यमान है
उनको यह तुच्छ संग्रह-
'ये जंजीरें कब टूटेंगी',
समर्पित।
भले ही वे वंदनीय पूर्वज
आज इस संसार में
सशरीर नहीं है
किन्तु स्वर्गस्थ उन हुत् आत्माओं का
आशीर्वाद
आज भी अविरल मिल रहा है।

Scanned by CamScanner

बहिन स्व. श्रीमती शशि प्रभा

जन्म:21/11/1941 निधन:16/04/2008

Scanned by CamScanner

स्मृति में-बहिन शशि प्रभा को

गोकुल जिया विराज चहकते प्यार सभी का पाया
'कनक' 'प्रकाश' 'अगम' 'रवि' 'शशि' संग निति आनन्द उठाया ॥१॥

सुना-सुनाकर परी-कथाएँ सब छोटे बहलाए
किसी बात पर जो हम रूठे लेकर गोद मनाए ॥२॥

निर्मल मन से सबके ऊपर स्नेह रहीं बरसाती
पीपर डार पड़े झूले पर हमको रही झुलाती ॥३॥

'कच्चेनीम-निबौरी' धुन जब पंचम सुर में गायी
सचमुच जल बरसाने वाली बदरी जल्दी छायी ॥४॥

सावन-मेघ-मल्हार सुनायी, फागुन बृज की होली
दूज-दिवाली-देवठान दिन द्वारे रची रँगोली ॥५॥

दूर देश जब गई किसी को नहीं भुलाया तुमने
दीर्घ काल सरिता विहार कर पुण्य उठाया तुमने ॥६॥

रक्षाबंधन के दिन जब भी पछुआ पूरब आई
सपने में भी लिये राखियाँ तुम्हीं पड़ी दिखाई ॥७॥

जब थक गयी, रही सुनती मीता की मोहक बतियाँ
'लीना' 'तपन' 'जितेन्द्र' सभी की छोड़ गई स्मृतियाँ ॥८॥

करके अखियाँ बंद चिरविदा कहकर चली गयीं तुम
रहे देखते सूने नभ को प्रियजन आँख लिये नम ॥९॥

-दर्शन बेजार

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

-:प्रणाम्:-

प्रस्तुत संग्रह के प्रकाशक लगातार जोर देते रहे हैं कि मैं अपने जीवनवृत्त, लेखन-प्रक्रिया तथा रचनाधर्मिता के बारे में अवश्य ही कुछ लिखूँ। उनके इस आदेश को मैं लम्बे समय तक टालता रहा, क्योंकि अधिकांशतः मुझ जैसे आधे-अधूरे तुच्छ लेखकगण बढ़ा-चढ़ाकर आत्मप्रशंसा करते-करते अपने कुल-कुटुम्ब का चालीसा लिखने पर उतर आते हैं। उनके बलात् हठस्वरूप अन्ततः मुझे विनम्रतापूर्वक यह चालीसा/परिवार-पुराण लिखना पड़ रहा है।

इस क्रम में मुझे निवेदन करना है कि मेरा जन्म आगरा-बम्बई राष्ट्रीय मार्ग पर बृजभूमि में बसे हुये 'पँचगाई' नामक छोटे से गाँव में हुआ, जहाँ आये दिन कोई न कोई आंचलिक/धार्मिक पर्व चलते ही रहते थे। शायद ही कोई ऐसा पर्व हो जिसमें बृज-संस्कृति के दर्शन न होते हों। सौभाग्यवश यह गाँव सम्राट अकबर के अंतिम दिनों तक उनकी विशेष कृपा का पात्र बना रहा। यहां के रावतवंशी ब्राह्मणों के पूर्वजों के पराक्रम लोहा मानकर सम्राट ने उन्हें दरबार में विशेष दर्जा भी दिया था। ताजमहल से ६ मील दक्षिण में बसा यह गाँव काफी लम्बे समय तक अंग्रेजों के शासनकाल में तो कुछ ज्यादा ही जागरूक तथा सक्रिय रहा और स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लेने वाले कुछ अति उत्साही सेनानियों की गतिविधियों का गुप्तयोजना-स्थल भी बना रहा। आसपास के गन्ना और अरहर के घने खेत भी ऐसी गुप्त योजनाओं को अंजाम तक पहुँचाने में उन्हें आश्रय देकर परोक्ष रूप से अपनी भी भूमिका निभाते रहे। यहाँ तक कि तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने ऐसी गतिविधियों पर ग्रमीणों को सबक सिखाने हेतु पूरे गाँव पर सामूहिक जुर्माना लगाकर घरों से अन्न का एक-एक दाना तक कुर्क कर लिया, जिससे अमीर-गरीब सभी ग्रामवासी अगली फसल तक भुखमरी की यातना झेलते रहे। अमर शहीद जसवंत शर्मा ने तो किशोरावस्था से ही महात्मागांधी के आह्वान पर अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष प्रारम्भ कर दिया और कारावास का दण्ड भोगा। फिर दुर्भाग्यवश कोई जानलेवा बीमारी भोगते हुये अल्पायु में ही संसार से चले गये। निकटवर्ती गाँव 'रोहता' के पंडित मूलचंद, पं० रामजीलाल रावत जैसे

Scanned by CamScanner

आन्दोलनकारी भी गुप्त रूप से समय-समय पर आकर ग्रामवासियों को स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लेने हेतु प्रेरित करते रहते थे।

यहाँ मैं अपने परिवार का चालीसा लिखे बिना नहीं रह सकता, भले ही वह विद्वानों को नीरस तथा विषय-परिवर्तन ही क्यों न लगे। पूज्य माँ स्व० सुशीला देवी उस समय गाँव में सर्वाधिक साक्षर महिला बताई जाती थीं, जो न केवल नारी-शिक्षा हेतु प्रचार करती रहती थीं बल्कि धार्मिक ग्रन्थों यथा-'सुखसागर', 'महाभारत', 'रामचरित मानस' आदि सभी ग्रन्थों की टीका सहित व्याख्या भी करती थीं। पूज्य पिता स्व० श्री नौरंगीलाल भी कोर्ट कचहरी के कामों से फुर्सत पाकर ऐसी धार्मिक पुस्तकों को खोज-खोज कर लाते रहते थे। मेरे चाचा स्व० श्री गोकुल प्रसाद कुलश्रेष्ठ तत्कालीन भारत सरकार में वैज्ञानिक पद पर कार्यरत थे। किन्तु उनकी साहित्यिक तथा देश-प्रेम सम्बन्धी अभिरुचि प्रबल थी। वे सन् १९३७ से १९३९ तक वे अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह के मुख्य नगर 'पोर्ट ब्लेयर' में कार्यरत रहे। वहाँ उन्होंने हिन्दी पठन-पाठन की नींव डाली तथा स्थानीय स्कूल में मानद सेवा कार्य के रूप में हिन्दी पढ़ाते रहे। इस पुनीत कार्य में उनको क्रांतिकारियों के हितैषी डॉ० दीवान सिंह का बड़ा ही सहयोग मिला। डॉ० दीवान सिंह अपने आप में अनन्य देशभक्त थे। बाद में जापानी सेना के आधिपत्य काल में जब अण्डमान द्वीप समूह, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानी सेना के कब्जे में थे, जापानियों से मतभेद के कारण शहीद कर दिये गये। इसके बाद चाचाजी की तैनाती सन् १९३९ से १९४१ तक इलाहाबाद में हो गई जो हिन्दी साहित्यिक गतिविधियों का गढ़ था तथा वह समय भी 'आधुनिक साहित्य का स्वर्णकाल' था। साहित्य विभूतियों यथा-महाकवि निराला, महादेवी वर्मा, हरिवंशराय बच्चन, रामकुमार वर्मा जैसे रचनाकारों के मध्य उनका उठना-बैठना बराबर बना रहा। सोहन लाल द्विवेदी तो उनके आवास पर प्रायः आया करते थे। सन् १९४२ में जब वे इलाहाबाद से स्थानान्तरित होकर आगरा आये तो वे नगर में स्थित सरकारी आवास के बजाय गाँव के ही पैतृक मकान में रहने लगे। देशकाल तथा स्वतंत्रता के पश्चात् की परिस्थितियों के अनुरूप वे स्वतंत्रता-संग्राम की घटनाएँ नई पीढ़ी को सविस्तार धाराप्रवाह रूप से सुनाया करते थे। महान

Scanned by CamScanner

क्रांतिकारियों के बलिदानों की गाथाएँ बचपन में ही उनसे सुनने का परम सौभाग्य मुझे मिलता रहा। आचार्य विनोबा भावे अपनी देशव्यापी 'भूदान यात्रा' के दौरान हमारे क्षेत्र में भी पधारे थे। इस प्रकार अत्यन्त ही छोटी अवस्था में ही काफी निकट से उनके दर्शन करने और सुनने का महान सौभाग्य प्राप्त हुआ। ऐसे विशेष पारिवारिक वातावरण का प्रभाव मेरे विद्यार्थी जीवन पर काफी रहा।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु गाँव के बाद जब आगरा नगर के शिक्षण संस्थानों में प्रवेश लिया तो सर्वत्र महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, भगत सिंह मय वातावरण मिला। स्वतंत्रता प्राप्ति-काल के आस-पास जन्म लेने वाली समकक्ष पीढ़ी का यह परम सौभाग्य ही रहा है कि पूरे देश में स्कूल-कालेजों में गुरुजनों में यह होड़ लगी रहती थी कि वे अपने छात्रों में राष्ट्रीय भावना तथा देश-प्रेम के संस्कार डालने में सबसे आगे ही रहें। ताजमहल देखने के लिये जब भी कोई देशी-विदेशी महापुरुष नगर में आते तो शिक्षकगण हम सभी विद्यार्थियों को उनका दर्शन करने तथा भाषण सुनने के लिये बलपूर्वक भेज देते थे। दयालबाग स्थित राधास्वामी सत्संग स्थल पर प्रायः प्रत्येक शाम को कालापानी में निर्वासित जीवन व्यवतीत करने वाले क्रांतिकारी से साधु बने महात्मानन्द गोपाल को भी काफी निकट से देखने और समझने का भी अवसर मिला और जिज्ञासाग्रस्त होकर उनमें महर्षि अरविंद घोष की छवि देखता रहा। छात्र जीवन में स्थानीय छात्र राजनीति में सक्रिय रहने पर न केवल शिक्षा जगत के कई विद्वानों से सम्पर्क होता रहा बल्कि सीमान्त गांधी-खान अब्दुल गफ्फार एवं लोकनायक जयप्रकाश नारायण से भी महात्मागांधी की प्रासंगिकता पर वार्ता करने का बहुमूल्य सौभाग्य भी प्राप्त हुआ।

अभियंत्रण की स्नातक शिक्षा (बी०ई०) ग्रहण करने की चार वर्ष की अवधि में विभिन्न साहित्यिक/सांस्कृतिक गतिविधियों में न केवल संलिप्त रहा, बल्कि सभी गुरुजनों, (जिनमें अहिन्दी भाषी दक्षिण प्रान्तवासी अधिक थे) का भी हिन्दी लेखन हेतु भरपूर प्रोत्साहन एवं आशीर्वाद प्राप्त होता रहा। शिक्षा पूर्ण हो जाने के पश्चात् सार्वजनिक निर्माण विभाग उ०प्र० में सहायक अभियंता के पद पर जब मैंने सेवा प्रारम्भ की तो मेरी तैनाती यू०पी० निवास, नई दिल्ली में कर दी गई और अनायास ही प्रदेश/देश के महापुरुषों से सम्पर्क करने का अवसर प्राप्त होता रहा।

Scanned by CamScanner

विभाग में मेरी तैनाती सदैव ही संयोगवश सांस्कृतिक साहित्यिक/धार्मिक नगरों यथा- मेरठ, गोरखपुर, अलीगढ़, झांसी, लखनऊ, इलाहाबाद तथा कानपुर में ही हुई। यह सभी विश्व प्रतिष्ठित स्थान किसी न किसी रूप में मेरी क्षमता को निखारने में सहयोगी रहे। विशेषकर अलीगढ़ में तैनाती (१९८१-१९८५) के दौरान जहाँ पद्म श्री नीरजजी का आशीर्वाद मिलता रहा, वहीं अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० रवीन्द्र भ्रमर जैसे साहित्य के प्रकाश-स्तम्भ न केवल मेरा मार्गदर्शन करते रहे अपितु मेरी रचनाओं में यथोचित संशोधन करके, अपने गुरुतर अधिकार से मुझे प्रोत्साहित भी करते रहे।

वर्ष १९८५ से १९८९ तक वीर बुन्देलों की तपोस्थली 'झाँसी' में तैनाती के दौरान वर्ष में दो बार (जन्म दिवस २२ जुलाई तथा शहीद दिवस २७ फरवरी के दिन) सपरिवार ओरछा के निकट सतार नदी के किनारे बने उस मंदिर में श्रद्धासुमन अर्पित करने का पुण्य प्राप्त हुआ जहाँ शहीद चन्द्रशेखर आजाद अज्ञातवास में पुजारी बनकर ब्रिटिश हुकूमत की आँखों में धूल झोंकते रहे।

लखनऊ स्थानान्तरण हो जाने के पश्चात् सार्वजनिक निर्माण विभाग के लोकप्रिय प्रमुख अभियंता श्री धर्मवीर से लेकर श्री त्रिभुवन राम तक सभी विभागाध्यक्षों से आत्मीय स्नेह बराबर मिलता रहा। उ०प्र० इंजीनियर्स एसोसियेशन, असिस्टेंट इंजीनियर्स एसोसियेशन तथा अधिकारी क्लब के एक पदाधिकारी के रूप में अभियन्ता अधिकारियों से संगठनात्मक, कलात्मक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र का भी आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया। अखिल भारतीय अभियंता सांस्कृतिक मंच 'अभियान' में एक सेवक के रूप में देश-भर के विद्वान अभियंताओं के लेखन से लाभान्वित होता रहा। 'अभियान' संस्था के निर्देशों पर 'काकोरी काण्ड' में चंद्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल आदि के सहयोगी रहे महान क्रांतिकारी श्री रामकृष्ण खत्री के साथ काकोरी शहीद स्थल पर श्रद्धासुमन अर्पित करने का अवसर भी सौभाग्यवश कई बार प्राप्त हुआ।

समस्त बृजभूमि अपार लोक संस्कृति से भरपूर रही है। होली, दीपावली, जन्माष्टमी, सावन के सभी सोमवारों पर समस्त बृज क्षेत्र स्वतः ही कवित्वमय तथा कृष्णमय हो जाता है। अपने लेखन से बृज मण्डल को काव्यमय बनाने

Scanned by CamScanner

वाले पंडित सत्य नारायण 'कविरत्न' तथा कन्हैया के बालापन के गायन से कृष्णमय कर देने वाले शायर नजीर अकबराबादी निकटवर्ती गाँव के ही निवासी रहे हैं। उक्त सभी त्यौहारों पर आज भी समस्त बृजवासी एक विचित्र प्रकार की कृष्ण-तरंग में डूबे रहते हैं। बचपन में ही सभी ग्रामवासियों को काव्यमय देखकर कुछ-कुछ टूटा-फूटा लिखने की ललक मुझमें पैदा हो गई। मसिजीवी होने के कारण पीढ़ियों से परिवार, किसानों-मजदूरों की पैरोकारी में तल्लीन रहा। कदाचित इन परिस्थितियों के फलस्वरूप 'एक प्रहार-लगातार' तथा 'देश खण्डित हो न जाए' नामक पूर्व प्रकाशित दो तेवरी-संग्रहों की श्रृंखला में यह तीसरा संग्रह 'ये ज़ंजीरें कब टूटेंगी' आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

गरीबों, असहाय, दबे-कुचलों कर्ज में डूबे हुये किसानों, निरीहों की पीड़ा और दबंगों की दबंगई भी प्रारम्भ से ही देखने को मिली। बाद में भी समय-समय पर ऐसी दबंगई से कई बार दो-चार होना पड़ा। यहाँ तक कि वर्ष १९८७ में 'एक प्रहार-लगातार' की प्रतियाँ जब्त किये जाने की धमकी के दंश को भी झेला। लेखन-प्रक्रिया में कबीर, निराला, दिनकर, साहिर लुधियानवी, धूमिल, राजकमल चौधरी, गोरख पाण्डे को आदर्श मानता रहा।

तेवरी आन्दोलन के ध्वजवाहक तथा प्रणेता श्री रमेशराज एवं अन्य साथी तथा लखनऊ के साहित्यकार, मित्रगण मुझे सदा ही स्फूर्ति देते रहे। अलीगढ़ में तैनात तत्कालीन अधीक्षण अभियन्ता श्री विजय कुमार माथुर (अब सेवानिवृत्त मुख्य अभियन्ता) भी मुझे रचनाओं के प्रकाशन हेतु बराबर जोर देते रहे। लखनऊ नगर की सम्मानित साहित्यिक संस्थाएँ-चेतना साहित्य परिषद, 'प्रतिष्ठा' एवम् 'सरोकार' तथा इनसे जुड़े हुये विद्वान एवं सहृदय साहित्यकार बन्धुओं के सहयोग के उल्लेख के बिना मेरा यह परिवार चालीसा अपूर्ण ही रहेगा। लगभग पिछले बीस वर्षों से उनका आत्मीय मार्गदर्शन सदैव ही प्रेरणा देता रहा है। लखनऊ के साहित्यकारों तथा रंग कर्मियों के मध्य बन्धुजी के नाम से लोकप्रिय तथा अभिन्य मित्र श्री बन्धुकुशावर्ती का में विशेष आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस संग्रह का नाम 'ये ज़ंजीरे कब टूटेंगी' सुझाया।

अंत में,

मुझसे जुड़े हुये इन सभी परिवारों को प्रणाम.........

वह पूज्यनीय परिवार जहाँ मैंने जन्म लिया, पला और बड़ा हुआ,

Scanned by CamScanner

पैत्रिक गांव 'पचगाई' के समस्त ग्रामवासियों का वह बृहद परिवार जो मुझे विकसित करने में सदैव ही अग्रसर रहा। तथा जहाँ नर-नारियों में नन्दबाबा तथा यशोदा मैया जैसी सहजता, बच्चों में कन्हैया जैसी चपलता आज भी दिखती है। शिक्षकों-गुरुजनों का वह विशाल तथा विद्वान परिवार जिसने मुझे ज्ञान प्रदान किया, साहित्यकारों का वह उदार एवं मनीषी परिवार जो सदैव ही मुझे लेखन हेतु प्रोत्साहित करता रहा तथा सार्वजनिक निर्माण विभाग उ. प्र. के अधिकारियों-कर्मचारियों का वह वंदनीय परिवार जो तीन दशक की अवधि से भी अधिक समय तक मेरा हमदम बनकर मेरे साथ रहा।

विश्व पटल पर सर्वाधिक वर्षा का पर्याय रहे चेरापूंजी के स्थान पर अपने प्रयोगों तथा शोध के माध्यम से 'मौसिन राम' को स्थापित करने वाले वैज्ञानिक, भारतीय मौसम विभाग के महानिदेशक रहे तथा वर्ष २००७ में नोबेल पुरुस्कार प्राप्तकर्ता संगठन आई.पी.सी.सी. के पेनल में योगदान करने हेतु भारत सरकार द्वारा सम्मानित और मेरी पीढ़ी के मुखिया डॉ० शशि मोहन कुलश्रेष्ठ का मैं विशेष आभारी हूं जिन्होंने बीसवीं सदी को चौथे एवं पांचवे दशक में अण्डमान निकोबार, इलाहाबाद तथा आगरा में स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान अपनी आंखों से देखे और उनके वृतान्त मुझे उपलब्ध कराये।

जैसा कि प्रारम्भ में ही निवेदन किया है, अपने परिवार, शिक्षकों, साहित्यिक मित्रों, सार्वजनिक निर्माण विभाग के मित्रों के धन्यवाद ज्ञापन हेतु यह परिवार चालीसामय आत्मकथा अर्पित है, उनके आशीर्वाद, सहयोग के बिना यह संग्रह सम्भवतः प्रस्तुत न हो पाता। माँ सरस्वती को प्रणाम करते हुये इन सभी का पुनः आभार।

-दर्शन बेज़ार

Scanned by CamScanner

क्रान्ति के लिये रची गयीं तेवरियाँ

'दर्शन बेजार' के 'एक प्रहार: लगातार', 'देश खण्डित हो न जाए' बहुचर्चित तेवरी संग्रहों के बाद इसी क्रम में प्रकाशित 'ये ज़ंजीरे कब टूटेंगी' तीसरा तेवरी-संग्रह आपके सम्मुख है।

तेवरी काव्य की नूतन विधा है। इस विधा के बारे में डॉ. हरिवंश प्रसाद 'शुक्ल' मधुकर' का कहना है-'' तेवरी शब्द ही अपने आप में अपनी परिभाषा, स्वरूप तथा स्वतंत्र अस्तिवबोध का परिचय देता है। वस्तुत: 'तेवरी' अर्थात् तेवरी वाली, अभिव्यक्ति की मुद्रा तथा कथन की भंगिमा एवं वैचारिक ओजस्विता से परिपूर्ण रचनात्मक नवचेतना का प्रतीक है। (तेवरी पक्ष, वर्ष २४, अंक-१, पृ०१५)

'शुक्लजी' के उक्त कथन को सार्थक करती 'ये ज़ंजीरे कब टूटेंगी' संग्रह की तेवरियों का तेवरीपन घिनौनी व्यवस्था और उसके पोषकों व शोषकों के प्रति आक्रोश, असंतोष, विरोध और विद्रोह से भरे स्वर में मुखर होता महसूस किया जा सकता है।

कुछ विद्वान साहित्यकार तेवरी को ग़ज़ल की शक्ल की नकल मानकर चल रहे हैं। उनके तर्क केवल भ्रम पर आधारित हैं क्योंकि 'नालंदा अद्यतन कोश' और लखनऊ हिन्दी संस्थान द्वारा प्रकाशित 'उर्दू-हिन्दी शब्दकोश' में ग़ज़ल का अर्थ-'प्रेमिका से वार्तालाप' स्वीकारा गया है। यही नहीं ग़ज़ल पर अपने शोधकार्य में डॉ० नीलम महतो ने भी ग़ज़ल शब्द का अर्थ-'प्रेम-मोहब्बत की बातचीत' माना है, जबकि तेवरी तमाम विसंगतियों के प्रति जेहाद की कविता है। (अशोक अंजुम, सम्यक-७, पृष्ठ ३४)।

तेवरी रोमानियत और कल्पना-लोक से प्रथक यर्थाथ की जमीन पर संघर्ष की तासीर पैदा करती है जबकि ग़ज़ल आशिक-मासूक का वार्तालाप है (मदन मोहन 'उपेन्द्र', सम्यक-७, पृष्ठ ३४)।

तेवरी में क्रोध है, परिवर्तन की चाह है, विद्रोह की मुद्रा है। (चन्द्रसेन विराट, सम्यक-७, पृष्ठ ३४)।

तेवरी उस हर साजिश का विरोध करती है जो मानव-चेतना को सीमित करे (योगेन्द्र शर्मा तेवरी पक्ष-३, पृ० ३०)।

तेवरी गाली नहीं देती, शब्दवाण चलाती है, उस समाज पर जो कानून और अधिकारों का अनाधिकृत प्रयोग करते हैं (राजकुमार निजात, तेवरीपक्ष-३, पृष्ठ ३६)।

तेवरी और ग़ज़ल के इसी अन्तर को लेकर 'तेवरी: यथार्थ आग्रही सामाजिक चेतना के स्वर' (तेवरी पक्ष-३ पृष्ठ २६,२७,२८) शीर्षक लेख में अरुण लहरी कहते हैं कि-''तेवरी राशन के लिये लगी उस पंक्ति के लोगों का बयान है, जिन्हें दो जून की रोटी की जुगाड़ में अपनी सारी उम्र मर-खपकर गुजारनी पड़ती है।

Scanned by CamScanner

तेवरी ग़रीब की कमीज की सीता हुआ सुई और धागा है।

तेवरी बेटी को दहेज न जुटा पाने वाले बाप के आँसुओं की करुण गाथा है।

तेवरी वसंत के उन्मादक रूप को नहीं निहारती, बल्कि उस पर टिकी आशाओं, सम्भावनाओं, विश्वासों के साकार रूप की नींव डालती है।

तेवरी शांत जल के ऊपर विहार करते हुये हंसों के सौन्दर्य को नहीं निहारती बल्कि बहेलिये के तीर से घायल हंस की आँखों में छुपी वेदना को टटोलती है।

तेवरी नारी को साकी के रूप में नहीं चाहती, बल्कि स्वार्थी समाज द्वारा उत्पीड़ित-शोषित और छली हुई नारी की पीड़ा को अभिव्यक्ति देती है।

तेवरी किसी शराबी के अंग संचालन-परिचालन पर ध्यान केन्द्रित न कर, अपना सारा सोच उसकी विकृतियों पर लगाती है।

तेवरी, शमा और परवाने की दास्तान कहने में विश्वास नहीं रखती बल्कि गाँव और शहर के निर्धन रामू काका के चेहरे पर आयी झुर्रियों का इतिहास बताती है।

तेवरी किसी एक आदमी का आत्मालाप नहीं बल्कि उस भीड़ का बयान है, जिसे रोजी-रोटी और नीड़ की तलाश है।

तेवरी गुलाबी होंठों का रसपान नहीं, दवा के अभाव में दम तोड़ते खुश्क होठों का भान है।''

तेवरी के बारे में दिये गये उपरोक्त बयानों के आलोक में यदि हम दर्शन बेज़ार के संग्रह 'ये ज़ंजीरे कब टूटेंगी' की तेवरियों की जाँच-परख करें तो जैसा कि संग्रह के नाम से ही परिलक्षित होता है, कवि ने संग्रहीत तेवरियों के माध्यम से दासता, रूढ़ियों, गलीज व्यवस्था की उन बेड़ियों को तोड़ने का प्रयास किया है, जो धर्म, जाति, प्रान्त, सभ्यता, परम्परा आदि के नाम पर आदमी के पाँवों में डाल रखी हैं-

खून से बेज़ार के लिखी हुई तकदीर है
सबके सीने में समायी आज कोई पीर है।
दो कदम आगे चला जाता नहीं अब राह में
जालिमों के जुल्म की हर पाँव में ज़ंजीर है।

कवि दर्शन बेज़ार की तेवरियों के वार, उस पापाचार पर हैं जिसकी जड़ें भ्रष्टाचार के रूप में जमती जा रही हैं। कवि शोषण-मुक्त समाज देखना चाहता है-

पिछले वर्षों में हुई है ये तरक्की गाँव में
सिर्फ कागज पर बनी है सड़क पक्की गाँव में।

कुल मिलाकर संग्रह 'ये ज़ंजीर कब टूटेंगी' की समस्त तेवरियों का आस्वादन हर भावुक और संवेदनशील मन को झकझोरता है। प्रेम के कोरे रूप-जाल से अलग इन तेवरियों में अथाह वेदना कराह से एक राह भी निकलती दिखायी देती है जिसका नाम व्यवस्था परिवर्तन या क्रांति की चाह है।

-रमेशराज, १५/१०९, ईसा नगर, अलीगढ़

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय भावना, देशप्रेम

शोषितों की पीड़ा

बयान करती हुई

दबंगों की अति के

विरूद्ध मुखर तेवरियों

का संकलन

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

१

जालिमों के रक्त-प्यासे तीर को
तोड़ दो पाँवों पड़ी ज़ंजीर को।

लड़ लड़ाई और भूखे पेट तू-
अब्र बदलना है तुझे तकदीर को।

आँख हो तेरी सदृश ज्वालामुखी
दहकता अंगार कर ले पीर को।

तू नहीं राझा, प्रलय का गीत तू
छोड़ दे ग़ज़लों में डूबी हीर को।

है अगर 'बेजार' लिख तू तेवरी
थाम ले हाथों में इस शमशीर को।

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

२

तेरे दुःख से किसे काम है
बोल न कुछ, बहरा निजाम है।

कौन सुनेगा तेरे घर की,
गली-गली में कोहराम है।

हंगामा हर चौराहे पर,
दहशत में सारा अवाम है।

खेले कभी जहाँ बचपन में,
आज वहाँ फौजी मुकाम है।

करफ्यू का सन्नाटा देकर,
ढल जाती हर एक शाम है।

हालत यह 'बेजार' देखकर
गुमसुम अब रहमान, राम है।

Scanned by CamScanner

३

खून से दीवार पर लिक्खी हुई तकदीर है,
आज सीने में समायी हर किसी के पीर है।

दम लगा घुटने धुँए में, है जलन तेजाब-सी,
सिरफिरे माहौल की ये क्या अजब तसवीर है।

दो क़दम आगे चला जाता नहीं अब राह में,
जालिमों ने डाल दी हर पाँव में ज़ंजीर है।

अब तो मासूमों की आँखें देखतीं कोई न ख्वाब,
उनसे अब हरदम छलकता बेबसी का नीर है।

इस तरह डूबे परिंदे खौफ में सैयाद के,
ज़िंदगी जैसे कि उसकी दी हुई जागीर है।

अब ये सर 'बेजार' का उनके मुकाबिल है उठा,
जिनके हाथों में सियासत की खुली शमशीर है।

Scanned by CamScanner

४

हर किसी की आँख में अब एक-सा डर देखा है,
खौफ में डूबा हुआ सारा शहर देखा है।

सिर्फ आँसू ही तो मासूमों की आँखों में मिले,
हमने जब गौर से हर एक वशर देखा है।

कल तलक इस पर बहारें, रौनकें मिलतीं घनी,
आज झुलसा हुआ हर एक शजर देखा है।

दोस्तों की मेहरबानी से ही तो हमने अब तक,
आग में जलता हुआ अपना ही घर देखा है।

जब भी 'बेज़ार' ने आवाज उठायी है यहाँ,
उसने शूली पै चढ़ा अपना ही सर देखा है।

Scanned by CamScanner

५

पिछले वर्षों में तरक्की ये है सबकी गाँव में,
सिर्फ कागज सड़क है एक सुख की गाँव में।

दान को गइया की खातिर कर्ज होरी ने लिया,
आज ढक पाये न धनिया लाज तन की गाँव में।

लड़ मरे माधव व भोलू आलूओं के वास्ते,
सुधि न आयी उनको मुलिया के कफन की गाँव में।

फसल अबके बरस की सब सूद में जाती रही,
हर तरफ तन को सुखाती भूख झलकी गाँव में।

देखकर सत्ता की लाठी पंचपरमेश्वर डरे,
क्यों लगे चौपाल रे 'बेजार' अब की गाँव में।

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

६

कहने को तो इस बस्ती में रखवाले बहुतेरे लोग,
बाहर लाठी लिये खड़े हैं बस्ती को ही घेरे लोग।

कैसे जीवित बच पाएँगे जो निर्बल हैं, परबस हैं,
सिर्फ यही चर्चा करते हैं अब तो साँझ-सवेरे लोग।

जल भरने पनहारिन कोई कैसे पनघट तक जाये,
हर पनघट पर खड़े हुए हैं आकर वही लुटेरे लोग।

एक अभागिन चीरहरण पर विलख-विलख कर चिल्लायी,
आँखें नीचे किये उधर से चले गये मुँह-फेरे लोग।

जिनके साथ गले लगकर मैं दुःख-सुख में रो लेता था,
लगे बाँटने घात लगाकर मेरा घर वो मेरे लोग।

जो 'बेज़ार' रात-भर ज़हरीली फुंकारे भरते थे,
दिन का हुआ उजाला तो वे दिखने लगे सपेरे लोग।

Scanned by CamScanner

७

जुल्म आदमी का खुद पै जारी है,
हाथ में बर्छियाँ-कटारी है।

एक वहशी जुनून है सिर पर,
उफ् ये हालत भी क्या हमारी है।

बाँझ इन्सानियत हुई बैठी,
पाँव हैवानियत का भारी है।

लुट गयी आज द्रौपदी यारो!
देखिए कल की क्या तैयारी है।

मौत का सिर पै बाँध के सेहरा,
ज़िंदगी हर क़दम पै हारी है।

कल जला घर हमारी खुशियों का,
आज 'बेज़ार' किसकी बारी है?

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

८

तुम बनाकर चल दिये आँगन में मेरे क्यारियाँ,
मेरे मन के पेड़ पर तुमने चला दीं आरियाँ।

एक बँटवारे के ग़म से हम उबर पाये न थे,
दूसरे बँटवारे की करने लगे तैयारियाँ।

फूँस के छप्पर की छत है सिर छुपाने के लिए,
देखना है फैंकते हैं आप कब चिंगारियाँ।

अब तो शायद सिसकियों में ही दबी रह जायँगी,
गूँजती हैं आज मेरे घर में जो किलकारियाँ।

एक दिन ये आग बनकर भी जला देंगी तुम्हें,
जब भी जिद पर आयेंगी 'बेज़ार' की बेज़ारियाँ।

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

१

तू अपनी खुदी की हिफाजत में लग जा,
जमाने से खुलकर बग़ावत में लग जा।

क़सम है तुझे आज बहते लहू की,
हर एक जुल्म की तू खिलाफत में लग जा।

कोई साथ तेरे न आये कि आये
जमाने की बेहतर इनायत में लग जा।

तू अपनी ही धुन में चला-चल अकेला
उसूलों को लेकर हिफाजत में लग जा।

सितमगर के हाथों से ले खींच खंज़र,
नयी क्रांति के तू स्वागत में लग जा।

न कोई महल झोंपड़ी को उजाड़े
तू 'बेजार' इसकी हिफाजत में लग जा।

Scanned by CamScanner

१०

प्रगति-पथ से फासले बेहद बड़े हैं,
और अपने पाँव में छाले पड़े हैं।

क्या करें जाकर किसी की भी सभा में
भाषणों में सिर्फ फर्जी आँकड़े हैं।

कर रहे हैं वे निरंतर घोषणाएँ,
कर्ज़ की बैसाखियों पर जो खड़े हैं।

वो लगे करने यहाँ पदयात्राएँ,
बेकसों के स्वप्न जिनके आँकड़े हैं।

हर किसी को दे रहे झूठी दिलासा,
शब्द जिनके धूर्त वाणी से जड़े हैं।

एक रोटी का यहाँ टुकड़ा पड़ा है,
श्वानवंशी नित परस्पर फिर लड़े हैं।

बेच देंगे ये सियासतदां वतन तक,
शर्म क्या 'बेजार', सब चिकने घड़े हैं।

Scanned by CamScanner

११

अब नहीं कोई यहाँ हँसता व गाता देखिए,
गौर से इस गाँव की जर्जर व्यवस्था देखिए।

हर तरफ बदहालियाँ, बेजारियाँ बढ़ती गयीं,
हर किसी की आँख से आँसू की वर्षा देखिए।

पीढियाँ-दर-पीढ़ियाँ डूबी हुयीं हैं कर्ज में,
है बड़ी दयनीय घर-घर की अवस्था देखिए।

सोच में डूबे सभी, सरपंच ने ये क्या किया,
आप भी श्रीमानजी खल का तमाशा देखिए।

रख दिया परदेश में गिरवीं जमा था जो बचा,
कस रहा है सूद का उस पर शिकंजा देखिए।

एक मकड़ी की तरह 'बेजार' है हर ज़िंदगी,
जाल में खुद के यहाँ हर शख्श फँसता देखिए।

Scanned by CamScanner

१२

मिल गया अस्सी करोड़ों को बहुत पहले स्वराज,
पर नहीं बदला अभी सामंतशाही का मिजाज।

एक बेवा की जला दी झौंपड़ी सरपंच ने,
चल रहा है गाँव में बरसों पुराना ये रिवाज।

कर्ज में डूबी हुयी धनिया की मुनिया मर गयी,
वह नहीं करवा सकी तन बेचकर उसका इलाज।

छत पै दाने कल परिंदों को जो बिखराकर गया,
आज कोने में छिपा बैठा है वो ही बनके बाज।

हमने सोचा था कि कायाकल्प हो ही जाएगा,
क्या करें 'बेजार' सड़कर ही रहा सारा समाज।

Scanned by CamScanner

१३

भूल गयी सभ्यता उन्हें जो इन्क़लाब लेकर आए,
पूजे उनके चरण मंच पर भाषण जो देकर छाए।

भुला दिये वो लोग चढ़े जो हँसते-हँसते फाँसी पर,
झपट विराजे जो कुर्सी पर हमने उनके गुण गाए।

गाते रहते गुण ही केवल यह भी चलो गनीमत थी,
हम अपना अस्तित्व वंदना में रख अब तो मुसकाए।

अभिनंदन या अलंकरण के लिए रहे बस लालायित,
हम सत्ता के इर्दगिर्द ही चापलूस बन मँडराए।

भूषण और निराला-मीरा, या कबीर या धूमिल की,
वंदनीय लेखनी हमें अब देख-देख कर शरमाए।

पुत्र सरस्वती का कहलाने की हम सबको होड़ लगी,
पर 'बेजार' कलमकारों की कलम क्रांति से घबराए।

Scanned by CamScanner

१४

हाथों में जिनके हमको हिफाजत का था गुमाँ यारो!
वो ही गिरा गए हैं नशेमन पै बिजलियाँ यारो!

हफ्तों गुजर चुके हैं मेरा घर जले हुए फिर भी,
उठता है खिड़कियों से मगर आज भी धुआँ यारो!

लूटा मेरे वतन को सियासत ने किस कदर पूछो,
मौका-ए-वारदात पर छोड़े कहाँ निशाँ यारो!

मेरी जुबाँ के टुकड़े कई एक कर दिए तुमने,
कैसे करूँ बयाँ मैं जफाओं की दास्ताँ यारो!

बस्ती में एक मैं ही नहीं बेजुबाँ फकत समझो,
दहशत में जी रहे हैं सभी लोग अब यहाँ यारो!

सड़कों पै असलहों का दिखावा है आजकल भारी,
हालात मेरे मुल्क को ले जाएँगे कहाँ यारो!

'बेजार' अब तो वक़्त के तेवर बदल भी डालो,
बस हो चुकी है जुल्म को सहने की इंतहाँ यारो!

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

१५

है कहाँ इस गाँव में वो बात अब बेज़ारजी,
धूप में भी घिर रही है रात अब बेज़ारजी।

अपने-अपने घर के आगे भाँजते सब लाठियाँ,
हर तरफ है घात के सदमात अब बेज़ारजी।

गाँव का सरपंच भी आतंक का पर्याय है,
खून की है हर तरफ बरसात अब बेज़ारजी।

कोई भी मरहम नजर आता नहीं है कारगर,
जल गये हैं इसतरह जज़्बात अब बेज़ारजी।

भेड़ियों की रक्तरंजित सभ्यता के सामने,
आदमी की क्या रही औकात अब बेज़ारजी।

इस नये बदलाव का होगा भला अब अंत क्या,
यह किसी को भी नहीं है ज्ञात अब बेजारजी।

Scanned by CamScanner

१६

पाती नहीं तुम्हारी आयी, अब घर जल्दी आ जाओ,
खर्च हो चुका पाई-पाई, अब घर जल्दी आ जाओ।

जिस दिन से तुम शहर गये हो, गाय रम्हाती रहती है,
उसे घूरता रोज कसाई, अब घर जल्दी आ जाओ।

कितने दिन काटेगी अम्मा फटी-पुरानी धोती में,
कुछ तो होगी पास कमायी, अब घर जल्दी आ जाओ।

छोटी बिटिया हफ्तों से स्कूल नहीं जा पाती है,
उसकी फीस नहीं भर पायी, अब घर जल्दी आ जाओ।

लगातार चढ़ते बुखार से दादी ने पकड़ी खटिया,
उनको लाये कौन दवाई, अब घर जल्दी आ जाओ।

भैंस खेत में चली गयी बस, मुखियाजी के बेटे ने,
चाचा से की हाथापाई, अब घर जल्दी आ जाओ।

कभी-कभी 'बेजार' शाम तक फाके रखने पड़ते हैं,
कौन समझता पीर परायी, अब घर जल्दी आ जाओ।

Scanned by CamScanner

१७

आप यहाँ बेकार किसी से आस लगाए बैठे हैं,
देखो दो घर छोड़ पड़ोसी व्यूह बनाए बैठे हैं।

नाहक खुश होता फिरता है तू आज़ाद उड़ानों पर,
कुछ बहेलिए सोच परिंदे जाल बिछाए बैठे हैं।

तेरी चौखट के ऊपर कल जिनने मत्था टेका था,
शाम हुए पिछवाड़े वे असलहे छुपाए बैठे हैं।

जो देते हैं दुआ तुझे कि तेरा सफर मुबारक हो,
तेरी राहों में अब रोड़े वही बिछाए बैठे हैं।

ऊपर को भी देख कि घर की ऊँची उठी मुंडेरों पर,
गिद्ध कहीं से आके तुझ पर आँख गढ़ाए बैठे हैं।

यह तो चोरों की बस्ती है अपनी गठरी तू सम्हाल रे,
यहाँ गिरहकट सुंदर-सुंदर हाट सजाए बैठे हैं।

पूछेगा 'बेज़ार' न कोई तेरे सच के सिक्के को,
यहाँ झूठ के सिक्के ही बाजार दबाए बैठे हैं।

Scanned by CamScanner

१८

कैसी है तासीर यहाँ के पानी में,
उगते देख बबूल सभी हैरानी में।

कंकड़ थे पहले ही राहों के रोड़े,
काँटे और बिछे हैं अब अगवानी में।

रोपी थीं कलमें गुलाब की जितनी भी,
सूख गयीं वे घर की खींचातानी में।

खाद नहीं, तेजाब मिला है खेतों को,
हम फसलों को उगा आ गये हानी में।

जहरीले पौधों की फसलें और न हों,
रहना है हम सबको इस निगरानी में।

'बेजार' सियासत फूल न खिलने देती है,
सत्ता काँटों की है अब मनमानी में।

Scanned by CamScanner

१९

सींखचों को देखकर तू हो न यूँ भयभीत रे,
आग उगले लेखनी कुछ इस तरह रच गीत रे।

भूल से तुझको न छूले राजसी अभिव्यंजना,
लिख समय का सत्य, कर ले झौंपड़ी से प्रीत रे।

लेखनी जब भी मँथेगी शब्द, भाषा, नव्यरस,
तब कहीं जाकर मिलेगा क्रांति का नवनीत रे।

लोग जो हारे वही सैलाब में बहते गये,
धार के विपरीत जो तैरा उसी की जीत रे।

रात में चलकर अकेला जाएगा तम में भटक,
चल कि यूँ ही सोचने में दिन न जाए बीत रे।

टूटती आशा लिए 'बेजार' यूँ रोते नहीं,
ज़िंदगी की सिसकियों को तू समझ संगीत रे।

Scanned by CamScanner

२०

आखों में मुश्किलात नये ख्वाब गढ़ गये
हर हादसे पे गम मेरे परवान चढ़ गये।

की कोशिशें रकीब ने मैं घर न जा सकूँ
पहले चले जो मुझसे, सभी वह बिछड़ गये।

मुझ पै गिराके बिजलियाँ जालिम को क्या मिला,
मुझको जलाने वालों के खुद घर उजड़ गये।

दुश्वार रास्तों पे निकल ही पड़ा जो मैं,
ठोकर से मेरी राह के पत्थर उखड़ गये।।

'बेजार' मेरे पाँव के छालों की पूछ मत,
होके लहूलुहान कदम आगे बढ़ गये।।

Scanned by CamScanner

२१

इस तरह से क्रांति के कुछ मर्सिए गाए गये,
त्याग के कुरबानियों के अर्थ झुठलाये गये।

गौर से हमने पढ़ी इतिहास की जब भी किताब,
हर तरह बस भेड़ियों के ही निशां पाए गये।

हमने पुश्तैनी गुलामी की है इस हद तक सुनो!
उनके घर के स्वान तक गोदी में दुलराये गये।

उनकी तारीफों के पुल हम बाँधते ऐसे गये,
मंच पर बैठे गिरहकट शाह बतलाये गये।

घर की ड्यौडी पर खड़े दरवान को भी कर सलाम,
खानदानी भक्त के जज़्बात दिखलाये गये।

किस तरह 'बेजार' सजदे में झुकाये अपना सर,
बुतकदे या मयकदे में चोर जब बिठलाये गये।

Scanned by CamScanner

२२

माँगती है जब नई पीढ़ी बुर्जुगों से हिसाब,
दे नहीं पाता उसे कोई सवालों का जवाब।

घर में जो पूँजी जमा थी बोलिए अब है कहाँ?
कर्ज ऊपर से किसी का चढ़ गया कैसे जनाब।

हम किसी की रोटियों को ताकते हरगिज न थे,
आपने व्यंजन खिलाकर आदतें कर दीं खराब।

ब्याज तक खाली खजाने से अदा होती नहीं,
मूल धन से वापसी की बंद ही रखिए किताब।

क्या कभी 'बेजार' इन हालात से उभरेंगे हम,
देखते रहते हैं हम दिन-रात कुछ ऐसे ही ख्वाब।

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

२३

हर कोई अपनी ही धुन में चला जा रहा दाबे गठरी,
रातों-रात धनी होने की मची हुई है अफरा-तफरी।

फुर्सत नहीं किसी को पल-भर बैठ कहीं दम सुस्ताले,
सबके माँथे चिंताओं की खिंची हुई रेखा गहरी।

यह तेरा, वह मेरा बस ये समीकरण ही याद हमें,
अपने और परायेपन की बाँटन को रस्सी पसरी।

कौन पड़ौसी तीन दिनों से भूखे पेट यहाँ सोया,
पूछा नहीं किसी से, हम तो चाख रहे माखन-मिसरी।

हमने कब पहचानी पीड़ा, जन की आह-कराहों की,
इस घर से उस घर तक टूटी संबंधों की हर पटरी।

ऐसे में 'बेजार' क्रांति की ज्योति उठा तुम चलो, बढ़ो,
गूँजेगी फिर से मानस में नयी चेतना-स्वर-लहरी।

Scanned by CamScanner

२४

जल, थल, नभ, पाताल, चराचर, सबके सब हैं डाँवाडोल,
अब तो हे शंकर प्रलयंकर, अपना नेत्र तीसरा खोल।

कब तक ध्यानमग्न ही रहकर चुप बैठे तुम देखोगे,
हिंसा के कारण लपटों से झुलस रहा सारा भूगोल।

अमरीका हो या कि एशिया या अफ्रीका या यूरोप,
सुलग रही है आग हर जगह सभी रहे ज़हरीला बोल।

बारूदी सुंरग के भीतर बैठा उग्रवाद का अजगर,
जहर उगलती फफकारों से रहा हवाओं में विष घोल।

नित दुष्टों की हथियारों संग नेता करवाते घुसपैंठ,
अब 'बेजार' न राजनीति का दीख रहा है कोई मोल।

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

२५

जिन शहीदों ने लहू देकर सँवारा है चमन,
आज नम आँखों से मेरा उन शहीदों को नमन।

छीन ली जब भी कपट से शत्रु ने कुछ भूमि तो,
चल पड़े रणबाँकुरे बाँधकर सर पर कफन।।

गोलियों, बारूद-बम के बीच भी हँसते रहे,
होके जख्मी भी न की महसूस पल-भर को थकन।।

गोलियों का शोर, बर्फीली हवाएँ, क्या फिकर?
जब भगत सिंह की तरह मन में लगा ली हो लगन।।

रात में भी बर्फ की चोटी पै बस चढ़ते गये,
दम लिया जाकर वहाँ फहरा तिरंगा-ए-वतन।।

जान देने को वतन पर होड़-सी फिर मच गई,
याद आई आखिरी दम तक लिये राखी बहन।।

अपने अद्भुत शौर्य से आकाश-से ऊँचे हुए,
सर झुकाने को उन्हें झुक जायेगा खुद ही गगन।।

जिनकी कुर्बानी के किस्से एक से बढ़कर हैं एक,
कह नहीं पाती जुबाँ 'बेजार' की उनके कथन।।

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

२६

आज गुमसुम हैं कभी तो फन उठेंगे,
हैं सँपोले एक दिन विषधर बनेंगे।।

राजधानी में हजारों बाँबियाँ हैं,
ये उजाले में कहीं छुपकर रहेंगे।।

खोजने को रात में अपना शिकार,
खल कहीं निर्भीक हो विचरण करेंगे।।

आजकल बेचैन हैं रूहे-नवाब,
कहकहे बारादरी में क्या लगेंगे।।

बस्तियाँ खुद ही सुरक्षा को बढें अब,
सब घरों में जाके अब अजगर छुपेंगे।।

हर तरफ चौसर सियासी बिछ गयी है,
दौपदी को ही बड़े खतरे बढ़ेंगे।।

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

२७

संबंधों पर जमी स्वार्थ की काई अब,
सदाचार के अर्थ हुये हरजाई अब।

क्लान्त-भ्रमित-असहाय बटोही क्या बोले,
खन्दक है इस ओर, उधर है खाई अब।

आदर्शों का पतन हुआ इतना भारी,
दो-दो चहरे सबके पड़े दिखाई अब।

बसा राग दरबारी सबकी आदत में,
बन बैठे सब लोग चन्दवरदाई अब।

'दिनकर' की हुंकारें गायब मंचों से,
मात्र चुटकुला विज्ञ हमारे भाई अब।

सिर-माथे 'बेज़ार' हमारे स्वार्थ चढ़े,
वैष्णवजन तक भूले पीर पराई अब।

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

२८

सूखे ताल-तलैया-नदियाँ, रीती गागर, खाली डोल,
कब तक ये विद्रूप रहेगा, धरती माता कुछ तो बोल?

चुरा ले गये सब हरियाली मौसम के ये काले चोर,
कहाँ गठरिया किसने बाँधी, कोई नहीं रहा मुँह खोल।

क्लान्त हाँफते हुये बटोही इस भटकन का अन्त नहीं,
मृग मरीचिका में रसवन्ती आज रहा तू व्यर्थ टटोल।

चक्रवात ही चक्रवात का शेष रहा हमसे सम्बन्ध,
शीतल मंद हवा के झौंके बेच दिये हमने बेमोल।

हमने घर के आसपास ही आग लगायी वो 'बेजार'
काला धुँआ, हवा तेजाबी, जहर दिया अम्बर में घोल।

Scanned by CamScanner

२९

उनके हिस्से में कुटिया का बस छोटा-सा कोना है,
दादा-दादी क्या कर लेंगे जब बँटवारा होना है।

हर बेटे की अलग-अलग मति, अलग-अलग सबकी राहें,
कई जलेंगे घर में चूल्हे इसी बात का रोना है।

अव्वल तो बीजों का उगना संदेहों के घेरों में,
अगर उगे ये बीज फसल को रोगग्रस्त ही होना है।

मँझले बेटे ने अमरीका से 'डालर' को भेजा है,
बूढ़े हाथ करें क्या उसका चाहे चाँदी-सोना है।

नाती-नातिन की किलाकारी भी दुःख का उपचार नहीं,
एकाकी जीवन का क्रंदन अश्रुपात में धोना है।

साँसों की 'बेज़ार' गठरिया लदी हुई अपने सिर पर,
भले बोझ है भारी लेकिन, मजबूरी है, ढोना है।

Scanned by CamScanner

३०

होरी के सर से ये कर्जा कभी न कम हो पायेगा,
आज गयी है गाय कर्ज में, कल को घर भी जायेगा।

बादल छाकर नहीं बरसते, फसल गयी है सारी सूख,
मौसम भी अब हर गरीब को और गरीब बनायेगा।

प्रगतिवादियों की हमदर्दी पाकर इतना होना है,
मृग मरीचिका जैसा कोई खेल यहाँ मुसकायेगा।

रही झेलती निर्धन-जोरू 'भौजाई' का दंश यहाँ,
चाची, ताई, अम्मा कहकर, इसे न गाँव बुलायेगा।

जनक-सुता के संग राम हैं इस युग भी भोले-भाले,
पंचवटी पर मारीचों का और अभी छल छायेगा।

Scanned by CamScanner

३१

आओ हम विरदावलि गाएँ,
गीदड़ को वनराज बताएँ।

दौड़ रहे सब जिस ड्योढ़ी तक,
हम भी जाकर शीश झुकाएँ।

होड़ लगी आगे रहने की,
फिर हम क्यों पीछे रह जाएँ।

स्तुति-वदन, अभिनन्दन का,
घर-घर वातावरण जगाएँ।

छाँट लिया सच का प्रतीक अब,
गिरगिट को आदर्श बताएँ।

हम 'बेजार' भले हैं कायर,
भगत सिंह की कसमें खाएँ।

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

३२

बँटवारे की बात सभी के अंतर में
नयी हवा का दौर पुरानी बाखर में।

दादाजी की छड़ी-घड़ी चश्मा-टोपी,
हो जायेंगे तितर-बितर घर ही घर में।

कौन पढ़ेगा मुझे, कौन अब बाँचेगा,
अम्मा की रामायण आयी इस डर में।

सामूहिक पूजा का चलन खत्म होगा,
भक्ति-गीत होंगे अपने-अपने स्वर में।

बूढ़ी काकी सबको समझाती ऐसे
जैसे सर को पीट रही हो पत्थर में।

Scanned by CamScanner

३३

गुलमुहर, चमेली, बेला की सूखी टहनी,
अब हर दरवाजे स्वागत करती नागफनी।

जो चार बजे तो फूल तोड़ डाले जो भी,
काँटों की नई संस्कृति आज हुई अपनी।

हर पौधे पर चुपके-चुपके विष-बेल चढ़ी,
आरंभ हुई जहरीली हवा यहाँ बहनी।।

कुछ लोग अजनवी घूम रहे हैं बस्ती में,
हर नुक्कड़ पर आम हो गई आगजनी।।

दिन में भी बंद रहे सब खिड़की-दरवाजे,
दहशत ही दहशत, हुई व्यवस्था अब छलनी।।

बाहर से जो शांत हवेली दीख रही,
उसकी अंदर की दीवारें हैं रक्तसनी।।

'बेजार' करो तुम याद कि पिछले दंगों में
इस घर से ही शुरू हुई थी आगजनी।।

Scanned by CamScanner

३४

खड़ा हुआ है दूर क्षितिज पर सूरज नई रश्मियाँ धारे,
उठकर स्वागत करो सुबह का, धूप खिलेगी सबके द्वारे॥

काली रात अमावस वाली देख-देख भयभीत हुये थे,
दूर-दूर तक घिरे घनेरे, मिटने को है अब अँधियारे॥

थके-थके-से-डरे पखेरू दुबके रहे नीड़ में जो सब,
अब निकलेंगे चहक-चहक कर खुली हवा में पंख पसारे॥

भले पार मँझधार लक्ष्य है, भले आँधियों का अंदेशा,
सँभल चलो ले नाव भँवर में भले दूर हैं अभी किनारे।

तुम न बढ़े आगे तो कैसे हरियाली होगी ऊसर में,
फसल नहीं अब तक धरती पर भूख मिली है साँझ-सकारे॥

स्वप्न विवेकानन्द संत ने जो देखे अब होंगे पूरे,
उठो युवाओं तुम सब मिलकर नभ से लाओ तोड़ सितारे॥

कठिन भले हो, पर न असंभव भागीरथ के लिये कभी कुछ,
निकल पड़ा जो स्वयं अकेला उसके साथ जुड़े जन सारे॥

जितना हमसे बना, किया है, जो न कर सके सौंप रहे हैं
हमनें तो 'बेजार' लिखी है नई सदी अब नाम तुम्हारे।

Scanned by CamScanner

३५

ऊँचाई नापन को नभ की कुछ ऐसा कर डाला है
तबियत से इक पत्थर हमने अब हर बार उछाला है।।

पहले ही प्रयास में मित्रों ऐसा इक सूराख हुआ,
प्यासी धरती शीतल करने फूट पड़ा परनाला है।।

कल सागर की गहराई भी नाप तुम्हें बतला देंगे,
जाकर बीच मगरमच्छों के हमने जलधि खँगाला है।।

हो कितना उद्दण्ड हिमालय राह न रोके गंगा की,
भागीरथ बन हमने कर में थामा बज्र-कुदाला है।।

गया चन्द्रमा-मंगल ग्रह तक अब इन्सां 'बेज़ार' भले,
भूख, गरीबी, बीमारी का लेकिन भू पर जाला है।।

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

३६

तम हरने को दिन-भर जिसने निज तन दहन किया,
उस ढलते सूरज को ही बस हमने नमन किया।

उगते रवि को शीश झुकाने जो भी आए गंगा-तट,
उनसे बचकर ही रहने का हमने जतन किया।

बूढ़ा बरगद जो पंथी को देता आया छाँव,
उसकी हर सूखी डाली को हमने नमन किया।

चालबाज धावक की यारो ठोंक रहे सब पीठ,
हमने महज थके पाँवों का अध्ययन गहन किया।।

राजा की बग्घी के आगे नाच रहे सब लोग,
बुधिया की अरथी के पीछे हमने गमन किया।।

जो 'बेजार' बाँचते आए थे विरदावलियाँ
उनके हर ताने को हमने हँसते सहन किया।।

Scanned by CamScanner

३७

नाम था जिसके कभी वारंट जारी,
आज उसकी आरती सबने उतारी।

कर रहे हैं हर सभा को वो सुशोभित
कागजों में चल रही जिनकी फरारी।

सालभर तक पुलिस से बचते रहे जो,
नगर में उनकी निकलती है सवारी।

जेब में पहुँची 'सुनामी' की उगाही,
स्वयं सेवी संस्था के बन प्रभारी।

वे नहीं दर्शन कभी देते अकेले,
साथ चलते हैं कई बन्दूकधारी।

तीन सौ दो की दफा में लिप्त रहकर,
खूब की गंदी सियासत की सवारी।

देखकर 'बेजार' उनकी अब दबंगी,
मूक-दर्शक मात्र है जनता बिचारी।

Scanned by CamScanner

३८

आप तो देते रहे बस यातनाएँ,
और ये फरमान हम बस मुस्कराएँ।

और भी ताकत भरेगी हौसलों में,
दे भले ही आप कितनी यंत्रणाएँ।

एक हद तक ही हुआ करती इबादत,
और कितना सिर ये सजदे में झुकाएँ।

[illegible] के सँग अब चला जाता नहीं है,
दोस्ती आखिर कहाँ तक हम निभाएँ।

घाव देकर आप मरहम ढूँढते हैं,
जानते हैं आपकी संवेदनाएँ।

आपका हर जुल्म अब हद से परे है,
क्यों न अब 'बेज़ार' भी तेवर दिखाएँ।

Scanned by CamScanner

३९

हिन्द सागर में उठाओ इस तरह का ज्वार यारो,
मान ले सिक्का वतन का फिर यही संसार यारो।

हिन्द ने सच की लड़ाई में न मानी हार यारो
खींच लो अब म्यान से तुम तेग या तलवार यारो।

गर्जना गूँजे गगन में सिंहगढ़ के सिंह की फिर,
तुम शिवाजी की तरह ऐसे भरो हुंकार यारो।

जान देने में न पीछे हम रहेंगे इस वतन पर,
वाहे गुरू गोविन्दजी की फिर भरो ललकार यारो।

सौ करोड़ों की जवानी आज बन जाये भगत सिंह,
चल पड़ो चोला वसंती पहन अबकी बार यारो।

बुद्ध-नानक और गांधी की अहिंसा के मुकाबिल,
सर उठा पाये न कोई हाथ ले हथियार यारो।

खून बह जमता नहीं है युद्ध में रणबाँकुरों का,
हो न पाए सरहदों की आबरू 'बेजार' यारो।

Scanned by CamScanner

४०

धूमधाम से राजाजी की आज सवारी निकलेगी,
आते-जाते हुये सड़क पर जान हमारी निकलेगी।

रातों-रात हटा दी जायेंगी टटियाँ-झोपड़पट्टी,
साफ घरों से ही तो उठकर शोभा न्यारी निकलेगी।

नाम पट्टिका लगा यहाँ पर स्वागत द्वार सजाए हैं,
रजवाड़ों की नई संस्कृति सब पर भारी निकलेगी।

राजा-रानी घोड़े चढ़कर मन्द-मन्द मुस्काएँगे,
जनता उनके पीछे करती जय-जयकारी निकलेगी।

बड़े-बड़े कवि उछल-उछल कर विरदावलियाँ गायेंगे,
भाटों जैसी 'धूमिल' की छवि बारी-बारी निकलेगी।

माला पहनाने वालों में क्या कुछ भगदड़ कम होगी,
अखबारों में कल को उनकी फोटो प्यारी निकलेगी।

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

४१

दौरे-खिजां में आग उगलती है चाँदनी
खाने लगी है आज चिरागों को रोशनी।

सैयाद ने है कैद किया बागवान को
लेकर खड़ा है आज वो शमशीर-आहनी।

फूलों के रंग स्याह गुलिस्ताने-वतन में
बुलबुल उदास शाख पै बैठी है अनमनी।

अम्नो-अमान की न दे और दुहाई
तेरी पता है उँगलियाँ सब खून में सनी।

'बेजार' लगा घूमने क़ातिल लिये खंज़र
कैसे बचे हरेक की अब जान पर बनी।

४२

शुतुरमुर्गी भ्रम कि आँधी टल गयी
ज़िन्दगी जड़ से उखड़ पल-पल गयी।

शाख़ जिस पर बनाया आशियां
बिजलियां उस पर गिरीं वह जल गयी।

हम समझ पाये न यारों का मिजाज
दोस्ती ही कर हमें घायल गयी।

सुख भरी उम्मीद का दामन लिये
ज़िन्दगी की शाम बेबस ढल गयी।

हम लगे जब प्यार करने दर्द को
बात यह 'बेजार' मन को खल गयी।

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

४३

वक़्त रुकने का नहीं है साथियो! चलते रहो
वक्ष पर अन्याय के तुम मूँग नित दलते रहो।

व्यर्थ ही भयभीत हैं हम जालिमों के जुल्म से
क्या जरूरी है कि यूँ ही हाथ को मलते रहो।

हर अंधेरे को उजाले में बदलने के लिये
दीप बनकर ज़िन्दगी-भर तेजतर जलते रहो।

भट्टियों में त्याग की हो चेतना इतनी प्रबल
तुम नुकीले क्रांति के हथियार-से ढलते रहो।

लोग तन-मन-धन लुटाकर रूप भारत का गढ़ें
राष्ट्र के हित तुम निरंतर मोम-से गलते रहो।

Scanned by CamScanner

४४

युग खड़ा हुआ है किरनों का स्वागत करने।
कवि आ जाओ सूरज बनकर अब तम हरने।

तुम उठो, जगाओ अलख यहाँ जन-जन में
हत् आत्मबोध से सभी लगे हैं भरने।

चल पड़ो हिमालय से लाने नवगंगा
फिर लगे लोग वसुधा पर प्यासे मरने।

केवल तब ही नवयुग की छवि निखरेगी
नववसंत जब भू पर लगे उतरने।

श्रम का ध्वज लेकर अब घर-घर फहराओ
'बेजार' लगे भारत का रूप सँवरने।

Scanned by CamScanner

४५

जब गुलामी के नशे ने एशिया भरमा दिया।
तब अकेले हिन्द ने यूरोप को थर्रा दिया।

लक्ष्मी बाई, मंगलपांडे ने अमर गाथा लिखी
जंग का परचम वतन में हर जगह लहरा दिया।

कैद थे रंगून में फिर भी बहादुर शाह ने
आखिरी दम तक फिरंगी नीति को धक्का दिया।

सर कफन बाँधे फिरे आजाद, बिस्मिल या भगत
तख्ते-लंदन पर उन्होंने कहर ही बरपा दिया।

जर्मनी, जापान, सिंगापुर से गरजे बोस थे
जालिमों के हर इरादे को तुरत दफना दिया।

साथ मिलकर चल पड़े हिन्दू-मुसलमां-सिख सभी
तब तिरंगे को सभी ने गगन में फहरा दिया।

दोस्तों रखना नजर फिर देश के टुकड़े न हों
रोशनी से हो न वंचित फिर कहीं अपना 'दिया'।

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

४६

लौटकर भागे चले आओ इधर
तुम खड़े हो शेर की अब माद पर।

हम जिसे अब कह रहे इंसान हैं
खून से जबड़ा सना आता नजर।

रूप आदमखोर सबका अब हुआ
हर तरफ जुल्मों-सितम की है लहर।

कैदखाने में सभी खुशियाँ यहाँ
खौफ में डूबा हुआ सुख का नगर।

क्रान्ति की भाषा पढ़ेगा ये तभी
और भी 'बेज़ार' को बेज़ार कर।

Scanned by CamScanner

४७

सूली पै जब कभी यहाँ चढ़ता है मसीहा
अध्याय नये सत्य का गढ़ता है मसीहा।

हिल जाती हैं बुनियादें सभी जुल्मो-सितम की
मजमून बगावत का जो पढ़ता है मसीहा।

इतिहास के पन्नों पै सँवर जाती है स्याही
जब हाथ में खंजर लिये लड़ता है मसीहा।

हर राह के शोलों को हवा मिलती है आखिर
जिस राह में तूफां लिये बढ़ता है मसीहा।

झुक जाते हैं सिर लाख शहंशाहों के खुद ही
ज़िद पर कभी 'बेज़ार' जो अड़ता है मसीहा।

Scanned by CamScanner

ये जंजीरें कब टूटेंगी

४८

दिल का जुनून जब भी बगावत पै आयेगा
तय है कि इन्क़लाब फिजाओं में छायेगा।

हकदार है जीने की ये कुचली हुई नस्लें
आखिर कोई कब तक इन्हें ठोकर लगायेगा।

बन जायेंगे आतिश मेरे छेड़े हुये नग़मे
जुल्मों का जब कभी यहाँ तूफान आयेगा।

हम आग लगा देंगे उसी रोज़ जहां में
मजबूर जुबां को जो जमाना दबायेगा।

हम तोड़ ही डालेंगे शमशीरे-नादिरी
'बेजार' कोई जब यहाँ खंज़र उठायेगा।

Scanned by CamScanner